# आपातकाल

## में

# सृजन फुलवारी

आरती तिवारी 'सनत'

अन्तरा-शब्दशक्ति
प्रकाशन

# आपातकाल में सृजन फुलवारी

आरती तिवारी सनत

अन्तरा शब्दशक्ति प्रकाशन
वारासिवनी, मध्यप्रदेश

978-93-5372-139-8
संपादक- डॉ. प्रीति समकित सुराना
तकनीकी संपादक एवं आवरण चित्र- संदीप कुमार सोनी, वारासिवनी
मुख्य कार्यालय- 15 नेहरू चौक, वारासिवनी, जिला बालाघाट (म.प्र.) 481331
दूरभाष- (कार्या.) 07633-253159
मोबाईल- 9424765259
ईमेल- antrashabdshakti@gmail.com
वेबसाईट- www.antrashabdshakti
प्रथम संस्करण- 2020, आरती तिवारी सनत
मूल्य- 50.00 रूपये
मुद्रक- शैलू कम्प्यूटर्स, वारासिवनी
THE BOOK WRITTEN BY ARTI TIWARI SANAT

वैधानिक चेतावनीः- इस पुस्तक का सर्वाधिकार सुरक्षित है। लेखक की लिखित अनुमति के बिना इसके किसी भी अंश को फोटोकॉपी एवं रिकार्डिंग सहित इलेक्ट्रोनिक अथवा मशीनी किसी भी माध्यम में अथवा संग्रहण और पुनर्प्रयोग की प्रणाली द्वारा किसी भी रूप में पुनरूत्पादित अथवा संचारित प्रसारित नहीं किया जा सकता है। प्रस्तुत पुस्तक की समस्त रचनाएँ लेखक द्वारा अन्तरा-शब्दशक्ति प्रकाशन को प्रेषित की गई है। अतः प्रत्येक रचना की मौलिकता के किसी भी दावे हेतु लेखक जिम्मेदार है। प्रस्तुत पुस्तक के घटनाक्रम पात्र, भाषाशैली एवं स्थान सभी लेखक की कल्पना है। किसी भी प्रकार के वाद-विवाद के लिए प्रकाशक का सहमत होना अनिवार्य नहीं है।

# आपातकाल में सृजन फुलवारी

सादर नमन,

आज देश जिस भयावह स्थिति से गुज़र रहा है उस स्थिति में देश का हर एक व्यक्ति या ये कहें कि विश्व का प्रत्येक मानव आर्थिक, मानसिक और शारीरिक रुप से व्यथित है। कोरोना (covid19) जैसी महामारी ने पूरे विश्व को नैराश्य के दौर में लाकर खड़ा कर दिया है।

ऐसे समय में जब हमें अनुशासित रहना है, सामाजिक दूरी बनाकर सीमित संसाधनों में जीना है, एकदम से अपनी दिनचर्या को बदलकर एकाकी जीवन यापन का अभ्यास करना है और मन में महामारी की दशहत से होने वाली नकारात्मकता और निराशा को भी नियंत्रित करना है तब सबसे सही हल होता है खुद को रचनात्मकता से जोड़ लेना। जो व्यक्ति जिस कला से जुड़ा हो उसे मनः स्थिति के अनुरुप उसी कला में सृजनात्मक हो जाना चाहिए।

बस इसी विचार ने एक दिन प्रेरित किया कि अन्तरा शब्दशक्ति प्रकाशन से जुड़े रचनाकारों को एक सृजनात्मक सरप्राइज़ दिया जाए।

अन्तरा शब्दशक्ति और जीवन के सहभागी प्रिय 'समकित सुराना' से परामर्श किया तो उन्होंने भी सहर्ष हामी भर दी। मेरे संपादन के साथ तकनीकी संपादन की सारी जिम्मेदारी हमारे तकनीकि संपादक प्रिय 'संदीप सोनी' ने ले ली और इक्यावन दिन के लॉकडाउन में एक साथ 111 किताबों का निःशुल्क ईसंस्करण तैयार किया जिसका मुद्रित संस्करण देश के परिस्थितियाँ सामान्य होते ही रचनाकारों की इच्छानुसार सशुल्क किया जा सकेगा।

अन्तरा शब्दशक्ति संस्था के सभी सदस्यों ने सृजन को हमेशा प्रेरित किया है जिसके लिए मैं सभी की हृदय से आभारी हूँ।

आपातकाल में कुछ न करने की सज़ा को कुछ करके खत्म करने में सहयोगी बने समकित, संदीप-टीना सोनी, बच्चों और पूरे परिवार की आभारी हूँ जिन्होंने हर पल मुझे मजबूत बनाए रखा।

आशा है ये सरप्राइज़ सभी रचनाकारों को उत्साहित करेगा और पाठकों को हमारा यह प्रयास पसंद आएगा। हमें प्रतिक्रियाओं की प्रतीक्षा रहेगी।

सादर आभार

संस्थापक एवं संपादक<br>
अन्तरा शब्दशक्ति प्रकाशन<br>
एवं पंजीकृत संस्था<br>
डॉ प्रीति समकित सुराना

# अनुक्रमणिका


| | | |
|---|---|---|
| 1. | राजा की ताकत | 6 |
| 2. | मानवता का प्रेम दीप | 7 |
| 3. | देवदूत | 8 |
| 4. | सूनी गलियाँ | 9 |
| 5. | लौट रहे हैं अपने गांव | 10 |
| 6. | सीमित दायरा | 11 |
| 7. | लौट रहे हैं अपने गांव | 12 |
| 8. | जमीन पर चलना सीखा | 13 |
| 9. | स्लो फूड | 14 |
| 10. | तपस्या | 15 |
| 11. | आई नवरात्रि | 16 |
| 12. | सच का सूरज फिर निकलेगा | 17 |
| 13. | अम्मा | 18 |
| 14. | रामायण | 19 |
| 15. | कृष्ण पक्ष वो भोर का चांद | 20 |
| 16. | पुनः श्वास लेती | 21 |

# राजा की ताकत

राजाओं के राजा राम
तुम सा जग में कौन महान
सबसे पहले प्रजा का ध्यान
तुम से सीख लेते सभी राजन
अनुकरण तुम्हारा करते
पद चिन्हों पर तुम्हारे वह चलते
रहा समय ना पहले जैसा
सब कुछ बदला-बदला सा है
जीवन और अचार-विचार
रूप है बदला राजा का
राष्ट्रपति, प्रधानमंत्री अब होते
देश की बागडोर उनके हाथ
जैसा देश का प्रधानमंत्री होगा
वैसे ही प्रजा का पालन होगा
सबको समझे एक समान
जातिभेद, धर्म से ऊपर
सबके जीवन की सुरक्षा
सुख-सुविधा सबके लिए
क्या नर और क्या नारी
सबको शिक्षा का अधिकार
सबको जीवन जीने का अधिकार
नौकरी, व्यवसाय, रोजी-रोटी
हर नागरिक का जीवन
अधिकार
स्वास्थ्य सभी का रहे सुरक्षित
दुर्भिक्ष पड़े, अतिवृष्टी या घोर
संकट महामारी जैसा आज
समय का परिवर्तन
देख रही है दुनिया सारी
किसी का इस पर जोर नहीं
है लाचार दुनिया बेचारी
आज प्रधानमंत्री के आह्वान से
सबने
जनता कर्फ्यू को है माना
लॉक डाउन सारा देश है
पांच अप्रैल को रात नौ बजे से
नौ मिनट तक
घर-घर सब ने दीप जलाएं
मांगी दुआ महामारी का अंत हो
राजा भी अपने प्रजा के लिए
कर्ता प्रभु से विनय अनुनय
हाथ जोड़कर जनता से बोले
कुछ दिन रहो सभी घर के
भीतर
जीवन अपना सुरक्षित रखो
स्वस्थ रहो संयम बरतो
एक हो मेरे भारतवासी
पिता तुल्य सब उनको देख रहे
आस भरोस सभी को उन पर
देश की एकता अखंडता बनी रहे
दुनिया ने भारत को माना है
इसकी ताकत को जाना है
जग में भारत का मान रहे
सदा देश की शान रहे।।

# मानवता का प्रेम दीप

वैश्विक महामारी फैली है,
मानवता का दुश्मन आया,
मानव जीवन पर संकट मंडराया,
मानव से मानव को मिलने पर,
कैसी पाबंदी लगा रखी...
नजर कहीं नहीं आता वह,
ना जाने कितने जीवन निगल गया,
देश के प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी जी,
देशवासियों से अपील किया,
पांच अप्रैल को रात नौ बजे
दीप जलाएं, रोशनी करें,
सारे भारतवासी ने मिलकर,
मानवता का दीप जलाया,
घरों में रहने वाले हों,
या झुग्गी झोपड़ियों,
सड़क किनारे बसने वाले,
भारत की एकता अखंडता का,
भारत की संस्कृति सभ्यता का,
विश्व को यह संदेश दिया है,
यह मेरे सपनों का भारत,
देश हमें बचाना है जीवन सुरक्षित करना है,
एक एक जीवन की कीमती है,
आओ मानवता का दीपक जलाएं, भारत मां की शान बढ़ाएं।

# देवदूत

वैश्विक आपदा आई,
संकट के बादल घिर आए हैं,
किसी न किसी रूप में पहले
भी,
विश्व में आपदाएं आती रहीं,
हमेशा की तरह देवदूतों ने इस
बार भी,
अपनी जान की परवाह किए
बिना,
मानव की जान बचाने दिन-
रात,
डॉक्टर हो या नर्स लगे हुए हैं
अपनी,
पूरी करने जिम्मेदारी त्याग
तपस्या,
सब मानव की जान बचाने में,
अपने परिवार की चिंता ना कर,
मानवता ही परमो धर्म इनका,
पुलिस विभाग कर्तव्य निष्ठा के
साथ,
पालन कर रही अपना फर्ज,
सफाई कर्मी हर शहर हर
गलियों में,
साफ सफाई सेनीटाइज कर रहे
हैं,
स्कूल, अस्पताल, रेल के डिब्बे,
हर यथासंभव स्थान,
हमारी फौज भी जीवन बचाने
में लगी,
पूरे देश में लॉक डाउन किया है,
सभी तरह के यातायात को बंद
किया,
घरों के अंदर रहे, सुरक्षित रहें,
ऐसी विषम संकट की घड़ी में,
कई सामाजिक संस्थाएं गरीबों
को,
भोजन के पैकेट भेज रहीं,
मुफ्त इलाज किए जा रहे,
दवाइयां बांटी जा रही है,
मास्क बांटे जा रहे हैं,
सरकार हर एक नागरिक से,
संस्थानों से निवेदन किया है,
उनकी पगार ना रोकी जाए,
प्रधानमंत्री मोदी जी ने
सभी गरीबों को आर्थिक सहयोग
दिए,
आज सभी मिलजुल कर भारत
की एकता अखंडता को
अक्षुण्ण बनाए हैं,
सारे विश्व को संदेश देते,
यहां की संस्कृति, सभ्यता,
खानपान,
रहन-सहन की जीवन शैली,
अध्यात्म,
संयम, धैर्य, विश्वास ही ताकत
है,
वैश्विक संकट में यह सब
देवदूत ही,
जो मानव रूप धरे हुए सेवा में
एकजुट हुए है,
हे देवदूत! तुम सबको मेरा
नमन।।

# सूनी गलियाँ

याद नहीं मैंने कब देखी,
इन सूनी गलियों को पिछली मर्तबा,
रात दिन होती चहल-पहल,
पल भर को कोई ना दम लेते,
शहर, डगर, अपनी गलियाँ,
सर्दी के मौसम में बैठ खाट पर धूप सेंकते,
शोर मचाते क्रिकेट खेलते,
फल, सब्जी की रेहड़ी आती,
जोर-जोर आवाज लगाती,
महिलाएं अपने घरों से निकल कर,
खूब मोल कर सब्जी लेतीं,
खिलौने, गुब्बारे, बाजे वाले ,
बेचने आते बच्चों के ये सपन सलोने
गुड़िया की बालों वाला भी मीठे तार सुनहरे वाले,
गुड़िया भी लेने को जिद करती,
घरों की छतों पर बच्चे रंग-बिरंगी पतंग उड़ाते,
कहीं भवन निर्मित होता,
कहीं पुराने तोड़े जाते,
कोई राहगीर गाड़ी से गुजरता,
कोई स्कूटर, साइकिल से,
कहीं बच्चे स्कूल को जाते,
कहीं चाट पकौड़ी के ठेले पर,
मित्र मंडली के संग जाते,
आज सूनी गलियां देखकर,
अंतर्मन है रुदन कर रहा,
कब लौटेगी गलियों की रौनक...
सब कुछ होगा पहले जैसा...
पुराने मंजर याद आते
जब हम खेला करते गलियों में
दूर-दूर तक शोर मचाते,
मां घर के अंदर से आवाज लगाती,
बंद करो यह खेल तमाशा,
कल स्कूल भी जाना है,
चलो घर चलो बहुत देर हुई,
सुनी गलियां भी कहती हैं।।

# लौट रहे हैं अपने गांव

गांव छोड़ हम शहर को आये,
दो जून की रोटी की खातिर,
छूटा घर द्वार, खेत और
खलिहान,
शहर में अपना ठौर ढूंढते
फिरते,
कहीं नौकरी, रोजी का धंधा,
कभी दिहाड़ी मिलती,
कभी होते अपने खाली हाथ,
हजारों ख्वाहिशें आंखों में
संजोए,
शहरों की हम भीड़ में समाए,
मां- बाबू की बुढ़ापे में सेवा
करेंगे,
बच्चों को पढ़ा- लिखा दें,
अपने पैर पर खड़े हो जाएं,
आगे फिर वह ना दुख पाएंगे,
बन जाएं वे अच्छे शहरी,
मां -बाबू का सपना पूरा करेंगे,
कुछ रुपए पैसे जुड़ जाएं,
सपने सब पूरे हो जाएं,
कुछ समझे ,कुछ समझ ना
पाए,
कहां से आई यह वैश्विक
महामारी,
दुनिया भर में कोहराम मचाने,
जीवन की रक्षा पहले,
शहर के शहर बंद कर दिए गए,
मोटर गाड़ी ऑटो टैक्सी,
पल-भर में जीवन बदला,
जान अपनी बचाने को,
एलान किया गया घर में रहना,
जब तक लॉक डाउन ना खोलें,
मना हो गया शहरों से
निकलना,
मन ही मन सब सोच रहे,
लौट जाएं अब अपने गांव,
बहुत बिताया शहरी जीवन,
सपनों का दर्पण चूर हुआ,
आए थे रेलगाड़ी और बसों से
जा रहे पैदल चल-चलकर,
सिर पर अपना बोरिया बिस्तर,
हाथ थामे बच्चे की उंगली,
लौट रहे हैं अपने गांव,
पहुंच जाएं अपनों के गांव।।

# सीमित दायरा

ऊंची-ऊंची उड़ानें हमारी,
मृग मरीचिका के पीछे भागे,
दो के चार हम खर्च करते,
कभी न जाना जिसका मोल,
बेपरवाही की हमने सदा,
कभी ना पीछे मुड़कर देखा,
बड़े-बड़े पैकेज के पीछे हम
भागते,
दिन-रात खूब मेहनत करते,
घूमते हम सदा देश -विदेश,
उड़ते फिरते वायुयानों में,
एयर कंडीशन में रहते हमेशा,
बड़ी बड़ी गाड़ियों में घूमते,
भोजन भी अक्सर बाहर करते,
जीवन की इस आपाधापी में,
याद नहीं कुछ भूल चले,
वक़्त ने ऐसा दिया है धोखा,
भाग रहे थे हम जिसके पीछे,
दो पल में जमीन पर रख दिया,
सब कुछ जैसे सीमित कर
दिया,
आसमां भी छोटा-छोटा,
चांद तारे भी छोटे-छोटे,
दुनिया सारी सीमित हो गई,
बंद कमरों के घर में अपने,
वक्त बड़ा बेरहम है मानव,
कब काल रूप बनकर आए,
जरा संभल कर चल तू,
मिलना जुलना कुछ कम कर
दो,
रहो तुमअपने सीमित दायरे में,
यही इस वक्त की है पुकार,
सारा विश्व यही कह रहा,
हाथ जोड़कर नमन कर रहा,
सीमित दायरे में हो जाओ,
जीवन को अपने सुरक्षित पाओ,
महामारी से इस जगह को
बचाओ,
सारा देश एकजुट हो जाओ,
एक दूजे का साथ निभाओ,
अपनी जड़ों की ओर लौट
जाओ,
सीमित दायरे में हो जाओ।

# जमीन पर चलना सीखा

प्रकृति ने ऐसी करवट बदली
उड़ रहे थे जो आसमानों पर,
पकड़ धरा पर उनको फेंका,
छोड़ चले थे अपना देश,
बस गए जाकर परदेश,
प्रकृति ने अपना हिसाब,
देखो कैसो समझाया,
तरस रहे हैं घर आने को,
क्या सोचा था तुमने,
छोड़ गए जब....
बूढ़े अपने माता-पिता,
कभी फोन पर बात किया,
बहुत किया वीडियो कॉल,
देख- देख कर खुश हो जाते,
कभी दिखा क्या उनका दर्द,
क्या यही संस्कार दिया था ....
मन ही मन में सोचा करते,
सपने देखे आंखें पथराई,
पल-पल समय वह गिना करते,
एक दूजे को देखकर,
नयनों से गिरती अश्रु धारा,
सभी जुबानी बयां करती,
प्रकृति यह बतलाने आई,
मुझसे जीत सकोगे ना भाई,
समय-समय पर मैं आती हूँ,
भूले पाठ सिखा जाती हूँ,
नए रूप और नए नाम से,
मैं हमेशा ही रहती हूं,
दबी रूप में, शांत भाव में,
जब तुम मानव अति कर देते,
मेरे अस्तित्व को चुनौती देते,
तब मैं लेती विकराल रूप,
कई जीवन की लीलाओं का
अंत,
वैश्विक महामारी बन जाती हूँ,
संभल जाओ अब मानव तुम,
ना कभी करना प्रकृति से
खिलवाड़,
कभी तो जमीन पर चलना
सीखो,
आज ये तुम प्रण ले लो,
इसके नियम कभी न तोड़ो।

# स्लो फूड

स्लो फूड का फिर आया जमाना
भाग रहे थे सभी फास्ट फूड का
नाम सुनकर...
क्या शहर और क्या गांव
सभी इसके दीवाने
घर का भोजन किसी को ना
भाता
बच्चे हो या बड़े सबको मैगी की
भूख सताती...
भूख लगे तो मैगी खाओ
दो मिनट में झट से बनाओ
चाऊमीन, नूडल्स, पास्ता,
मैक्रोनी
पिज्जा, बर्गर खूब मजे से खाते
जन्मदिन हो या सालगिरह
खुद भी खाते सबको खिलाते
साथ में कोल्ड ड्रिंक, कोका-
कोला
हाथ में चिप्स भरा भगोना
कुरकुरे हो तो क्या कहना
मोमोज ने आकर तड़का लगाया
अब क्या कहना नई पीढ़ी का
रोटी दाल, लौकी, तरोई की
सब्जी
पालक, मेथी, चौलाई की भाजी
देख कर उनको आता रोना
समय बदला है देख करोना
डर के सब पकड़े घर का कोना
घर से नहीं बाहर जाना है,
फास्ट फूड का नाना आया
कैसी भयंकर तबाही मचाया
सोनू, बबलू, डब्लू, मोना
सबको ही डराए करोना
फास्ट फूड से टाटा कर लो
स्लो फूड से हाथ मिला लो
अब कोई ना रोना धोना
दूर भगाओ देश से करोना।

# तपस्या

जीवन का हर क्षण मानव के लिए तपस्या है,
जिंदगी की जंग को जीतना भी तपस्या है,
बरसों लगते हैं इसमें,
सुख और दुख के बीच संतुलन रखना होता है,
ब्रह्मचर्य धर्म का पालन करना तपस्या है,
गृहस्थ धर्म का पालन करना भी तपस्या है,
वानप्रस्थ धर्म को निभा लेना भी तपस्या है,
जीवन का हर रूप तपस्या,
मानव जब देश, समाज, परिवार के लिए कुछ अपना योगदान करता है,....
हम अपने जीवन में इस जग के लिए कुछ कर जाते हैं,
प्रतिफल यदि सुखद हो समाज के लिए अनुकरणीय हो,
वह तपस्या ही सफल है,
राम जैसी तपस्या इस सांसारिक जीवन के लिए संभव नहीं...
समय बदला है जीवन का रूप बदला है,
बदलते परिवेश में जाति धर्म से ऊपर उठकर मानवता को ही "परमो धर्म" बनाया जाए,
कलयुग में यही पूर्ण तपस्या है
यह तपस्या सार्थक भी है,
कर सकें हम ऐसी तपस्या
तो आओ हम सब मिलकर प्रण लें,
मानव जीवन सुखी हो,
समृद्ध देश हो, उन्नत हो
सर्वे भवंतु सुखिनः की भावना निहित तपस्या ही कल्याणकारी है,
लेकिन जननी और जन्मभूमि की साधना ही सबसे बड़ी तपस्या है।

# आई नवरात्रि

जब जब यह नवरात्रि आती,
मन का मंदिर पावन होता,
हृदय कमल में तुम्हें बैठाऊं,
अंतर्मन का दीप जलाऊं,
आत्म निवेदन करती हूं मैया,
गंगा सा मन पावन कर दो,
तेरे हर रूप का नित मैं,
पूजन करती,
मन की माला रोज पहनाऊं,
आई महा अष्टमी हवन करूं
मां,
छोटी-छोटी कन्याओं को घर में
बुलाऊं,
लाल पीले आसन बिछाऊं,
बड़े प्रेम से उन्हें जिमाऊं.....
टाठी में गंगाजल लेकर,
सबके नन्हें पग मैं धोऊं,
अपने आंचल से पोंछ,
उन चरणों की रज धूली,
माथे पर अपने तिलक लगाऊं...
देवी रूप मानकर उनको,
चंदन, कुमकुम, रोली का टीका,
पैरों में लाल- लाल महावर
सजाऊं,
हाथों में लाल लाल चूड़ियां
पहनाऊं,
करूं प्रार्थना हे मां जगदंबा,
आज आई भवानी मोरे
अंगना...,
हलवा पूरी चने का भोग लगाऊं,
नारियल फल मेवा से,
झोलियां भरूं मां,
लाल-लाल चुनरी ओढ़ाऊं,
जय जयकारा मां तेरी लगाऊं,
आज भवानी जीमो मोरे अंगना,
देख देख हर्षित मन मोरा,
मां से विनती करूं मैं,
मानव पर उपकार करो,
सब पर दया करो मां,
महामारी की विपदा हरो मां,
जग का तुम कल्याण करो मां,
आई संकट की है घड़ी मां,
कन्या पूजन करती हूं मां,
हो न कभी कन्याओं का जग में
अपमान ....
कर दो माफ सभी के अपराध,
दूर करो मां यह महामारी,
मानवता का पाठ पढ़ा दो,
प्रकृति का सबको ज्ञान बता दो,
कन्या पूजन करती हूं मां,
यही आशीष मांग रही मैं,
आज दुनिया के लिए,
हे महागौरी दुर्गा मां..
जग पर कृपा दृष्टि बरसा दो..!

# सुख का सूरज फिर निकलेगा

पतझड़ का मौसम हो तो
हरे भरे पेड़ भी ठूंठ नजर आते है
नव पल्लव को पल्लवित होने में
वक्त तो लगता है,
पंछी को नीड़ बनाने में वक्त तो
लगता है,
कटे हुए पंरों से उड़ने में वक्त तो
लगता है,
खेतों में बोये बीजों के अंकुर फूटने
में वक्त तो लगता है,
नन्हें से पौधों को पेड़ बनने में
वक्त तो लगता है,
कितनी भी काली हो घनघोर घटा
बूंदों को बरसने में वक्त तो लगता
है,
अरे जीवन तो संघर्ष ही है,
वक्त एक सा कब रहता है..?
मां की कोख से जन्म लेने में
शिशु को नौ मास तो लगता है,
बालक से सयाना होने में वक्त तो
लगता है,
जीवन को पढ़ने गढ़ने में वक्त तो
लगता है,
फिर क्यों घबराए मनवा सुख दुख
तो
बदली है,
कभी घनी घना कभी वह भी मना,
कुछ दिन तुम घर में रह लो,
जीवन सुरक्षित रह जाएगा,
दुनिया के बाजार में दौलत से
तुम खरीद न पाओगे,
जीवन है अनमोल बड़ा,
मन में कुछ चिंतन तुम कर लो
सुख का सूरज फिर निकलेगा,
लौट के फिर वह दिन आएगा,
दुनिया के इस रंगमंच पर
अपना तुम किरदार निभाओगे,
वही शहर, वही शजर ,वही नगर,
बाजार की गलियां....
वही सगे संबंधी होंगे, जिनसे कभी
तुम रूठे थे,
वक्त बदल गया है देखो आज वही
मनुहार हैं करते .. ..
तुम भी मिलने को तरस रहे,
मन ही मन लाख दुआएं करते,
महामारी का जग से मिट जाए
नामोनिशान ..
धैर्य रखो, रोगों का दुर्दिन काअंत
होने में वक्त तो लगता है,
प्राकृतिक आपदाओं से संभलने में
थोड़ा वक्त तो लगता है,
सुख का सूरज फिर निकलेगा....
घर की चहारदीवारी से निकलकर
मानव का मानव से मिलना होगा,
पहले तू अंदर के मानव से
मिलकर तू जगा उसे
करेंगे हम सब मिलकर पूजा-वंदन,
भोग-भंडारे,
मिल बांट कर हम खाएंगे
सुख का सूरज फिर निकलेगा,
एक नया सबेरा आएगा।

# अम्मा

बूढ़ी अम्मा की झुर्रियों पर,
एक नई लकीर देखी मैंने,
वह तो उनके हाथों में नहीं,
लेकिन चेहरे पर उभर आई,
अब शायद ना मिटेगी ये,
बन कर आई यूं कहर,
ने मिला दिए उनसे,
बिछड़े थे मुझसे जो कभी,
देख उनका अक्स आज,
अजनबी, अनुच्चरित दबी जुबां,
बरसों से तलाश थी जिसकी,
पल भर में यूं ही मिल जायेगी,
पोते-पोतियो के हाथ से लोटा भर जल
विदा की अंतिम बेला अंतिम आस,
दो बूंद गंगाजल पावन तुलसी का दल,
चारपाई के चारों ओर फैला सारा परिवार.. ,
जिंदगी की साज पर,
नव संगीत की नाद हो,
जैसे जन्म हो किसी नवीन राग का,
बिन दांतों की पोपली हंसी,
ईश्वर भी शायद हंसता होगा,
बिल्कुल ऐसी ही हंसी,
निर्विकार सी, निश्छल सी,
यूं अर्णव के कोलाहल सी,
हर बार तट से यूं समागम कर लौट रही,
फिर से वापस आने को आकुल।।

# रामायण

भारतीय संस्कृति का महान
ग्रंथ,
मानवता का धर्म सिखाती
जिंदगी को,
जीवन में अचार विचार व्यवहार
को मर्यादित करती,
त्याग भरा जीवन ही सच्चा,
माता-पिता की आज्ञा पालन,
गुरुजनों के प्रति सम्मान,
हर जाति, धर्म का सम्मान,
मानवता की पराकाष्ठा की
झलक,
पेड़-पौधे,पशु, पक्षी ,जंगली
जानवर
प्रकृति की सुंदरता ,इनका
संरक्षण,
अवधि, संस्कृत, तेलुगू
कई भाषाओं में लिखी गई,
जीवन का दर्शनशास्त्र है,
वैश्विक संकट के समय यह
धारावाहिक फिर से दिखाया जा
रहा,
समय पुराना लौट आया,
पहले रामायण जब दूरदर्शन पर,
प्रसारित होता सभी नागरिक,
बड़े मनोयोग से देखा करते,
उस समय भी सड़के सूनी हो
जाती,
सभी राम सीता को देखने को
लालायित,
उत्सुकता, उत्कंठा होती,
आज फिर से सड़के सूनी है,
लोग अपने-अपने घरों में बंद है,
सुबह शाम रामायण
दूरदर्शन पर दिखाया जा रहा,
जनता की मांग से आज फिर
से मानव को
मर्यादा पुरुषोत्तम राम की
स्मृति,
फिर से धरा पर अवतरित हो
राम, वानर सेना जैसे संगठन
विश्वास और धैर्य,
राजा की बात सर्वोपरि,
मानव संगठन एक-जुट हो,
संयमित रहे ,लक्ष्मणरेखा में
रहे,
जीवन सुरक्षित, देश सुरक्षित,
रामायण जीवन में उतारो।

# कृष्ण पक्ष वो भोर का चांद

नील रंग, घूंघट ओढ़े, हल्की-
हल्की,
मंद-मंद, सुगंधित सुवासित
हवाएं,
चारों ओर सन्नाटा, कोई चहल-
पहल नहीं,
केवल चिड़ियों की चहचहाहट,
आज यह देख पुरानी तस्वीर
याद आई,
सभी अपने घरों के अंदर बैठे,
अपनी दिनचर्या निर्वाह रहे,
बड़ा ही सौहार्द्र की भावना से
ओतप्रोत,
वसुधा भी हर्षित होती बारंबार,
कहीं कोई भाग दौड़ नहीं,
कहीं कोई प्रतिस्पर्धा नहीं,
अमीर गरीब के बीच की दूरियां,
सिमट गई है मानवता में,
नीले आकाश में
शांति का सूरज निकलने वाला
है,
ऐसा ही परिवर्तन नजर आ रहा
है,
इस समय न कोई आतंकवाद,
ना कोई गोला, बारूद की
आवाज,
आतंक का दहशत नहीं,
महिलाएं, बेटी सब सुरक्षित,
मानव के भीतर हैवानियत,
दरिंदगी,
सब कुछ पल भर में गायब,
जैसे कोई चमत्कार होने वाला
हो,
बस सभी इंतजार कर रहे,
विषम परिस्थिति है,
सभी एक दूसरे का साथ
अपने-अपने घरों से निबाह रहे
हैं,
कुछ भयावह नहीं लग रहा,
नेताओं का दोहरा चेहरा,
ना कोई राजनीति,
आज सभी बच्चे अपने अपने,
माता-पिता के पास लौट आए,
अब कोई वृद्धाश्रम की जरूरत
नहीं,
वैश्विक महामारी कोई दुष्कर
रोग,
हर मानव का यह संकल्प,
अब ना करेंगे, प्रकृति पर
अतिक्रमण,
जो हम को जीवन देती,
उसी से किया हमने दुर्व्यवहार,
जरा तुम अपने आप को बदलो
मानव,
मैं पहले ही जैसा जीवन देने
वाली
जीवनदायिनी प्रकृति हूं,
तुम को सचेत करने आई हूं,
कृष्ण पक्ष वो भोर का चांद,
नील गगन में उड़ते पक्षी,
नई उम्मीद के साथ......!

# पुनः श्वास लेती

बहुत समय बाद अचानक
बादल बहुत साफ नजर आने लगा,
खग, पक्षी कलरव करते,
सफेद बगुला भी उड़ रहा,
सरिता का जल स्वच्छ लगने लगा,
प्रवाह की गति भी तेज,
गंगा का जल बहुत स्वच्छ लग रहा,
यमुना भी बहुत साफ नजर आने लगी,
मणिकर्णिका घाट की अग्नि भी मध्यम,
विलुप्त मछलियां, डॉल्फिन भी, पानी में साफ दिखाई देने लगी,
भंवरा फूल पर मंडराता नजर आया, मधुमक्खियां मकरंद का रस चूस रहीं,
बहुत दिनों बाद घर के आंगन में
फुदुकुया आने लगी है,
प्रकृति में नव परिवर्तन होने का
आभास होने लगा,
इस एक महीने में सदियों पुरानी चीज
अचानक दिखने लगी,
परिवार का रूप बदला,
प्रकृति का रुख बदला,
दोनों ही मिलकर इस संकट की घड़ी मे, अपना योगदान फिर से देने की कोशिश कर रहे हैं,
जो जाने अनजाने प्रकृति पर
अत्याचार हुआ, उसको सुधारने की कोशिश मैं मानव लगा है,

एक आवाज आती है अंदर से,
अबसे तुम्हारा संरक्षण करेंगे,
तुम्हारे महत्व को समझेंगे,
तुम ही हो जीवनदायिनी,
तुम बिना जीवन सूना,
बार-बार सचेत करती रही,
हम अंधे हो गए भौतिकवादी थे,
बढ़ गए सोचा ही नहीं तुम्हारा दर्द,
कभी मुड़कर नहीं देखा,
फिर इस रूप में प्रकट होकर
साक्षात हो गई हो वैश्विक महामारी,
वन्य प्राणियों को प्राकृतिक रूप से जीने देंगे,
वन संपदा पर उनका ही अधिकार,
पेड़ पौधे, आकाश, वर्षा ऋतु का जल,
यह धरणी सभी जीवो का अधिकार,
समझ आने लगा शनै: शनै:,
पुनः श्वास लेती प्रकृति,
स्वच्छ आसमां,
विश्व परिवर्तन का आगाज हो रहा।।

**हिन्द व हिन्दी का सम्मान**
**है प्रमाण देशभक्ति का**
**आइए करें**
**सृजन शब्द से शक्ति का**

आज सन् २०२० विश्व पटल पर कोरोना जैसी महामारी का संकट देश और दुनिया पर छाया हुआ है, ऐसी स्थिति इतिहास में सन १८०६ और सन १६१६ में भी आ चुकी है, लगभग इसी प्रकार की सावधानियां बरती गई थीं। एक भारतीय होने के कारण मैं और मानवता के नाते मैं लोगों के दर्द, अनुभव को अपनी लेखनी के माध्यम से प्रकट करने की कोशिश कर रही हूं। जब भारत की १३० करोड़ जनता अपने घरों में रहकर पूरे विश्व के लिए एक एकता और अद्भुत मिसाल प्रस्तुत कर रही है। आज हमारे प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी जी अपनी अभूतपूर्व नेतृत्व क्षमता के साथ एक-एक व्यक्ति के जीवन को बचाने में दिन रात लगे हुए हैं और काफी हद तक हम सफल हुए हैं, वहीं हमारे देशवासी जिन्होंने जाति, धर्म, मजहब से ऊपर उठकर एक ऐसी मिसाल पेश की है जो सारी दुनिया को देखने के लायक है, जिन्होंने अपने प्रधानमंत्री की आह्वान पर दीप जलाया, घंटी बजाई और सबके जीवन को बचाने के लिए एक योद्धा की तरह अपना योगदान दिया। यह देश प्रेम की अद्भुत तस्वीर है। वहीं हमारा देश अमेरिका, ब्राजील और अन्य कई देशों की ओर मदद का भी हाथ बढ़ा रहा है। हम गर्व से कह सकते हैं यह श्रीराम की धरती है, यह विवेकानंद की धरती है। नमन है मां भारती को, भारत की १३० करोड़ जनता को।

रचनाकार
**आरती तिवारी 'सनत'**
Email- artitiwari1966@gmail.com



पं.क्र. (04/21/05/207665/19)
अन्तरा शब्दशक्ति
www.antrashabdshakti.com
15, नेहरु चौक, मेन रोड वारासिवनी, जिला- बालाघाट (म.प्र.), पिन 481331
संपर्क- 9424765259, अणुडाक: antrashabdshakti@gmail.com
978-93-5372-139-8
मूल्य 50/-



अन्तरा शब्दशक्ति के लिंक्स
Website:- www.antrashabdshakti.com
Facebook page:- https://www.facebook.com/antrashabdshakti/
Fecbook group:- https://www.facebook.com/groups/antraashabdshakti/